Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
& ENTREPRENEURSHIP

N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape

ASCI
Agriculture Skill Council of India

प्रतिभागी पुस्तिका

क्षेत्र
कृषि एवं संबंधित

उप - क्षेत्र
पोल्ट्री

व्यवसाय
कुक्कुट पालन

संदर्भ संख्याः AGR/Q4302, Version 1.0
NSQF Level 3

ब्रायलर फार्म वर्कर

प्रकाशक:

भारतीय कृषि कौशल परिषद
6वीं मंजिल, जीएनजी भवन, प्लॉट नं. 10
सेक्टर–44, गुरुग्राम –122004, हरियाणा, भारत
ईमेलः info@asci-india.com
वेबसाइटः www.asci-india.com
फोन नं. 0124-4670029, 4814673, 4814659

सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण, अप्रैल 2019

मुद्रक:

महेंद्रा पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड
प्लॉट नं. ई–42/43/44, सेक्टर–7,
नोएडा – 201301, उत्तर प्रदेश, भारत
ईमेलः mis.mahendrapublication@gmail.com
वेबसाइटः www.mahendrapublication.org

कॉपीराइट © 2019

भारतीय कृषि कौशल परिषद
6वीं मंजिल, जीएनजी भवन, प्लॉट नं. 10
सेक्टर–44, गुरुग्राम –122004, हरियाणा, भारत
ईमेलः info@asci-india.com
वेबसाइटः www.asci-india.com
फोन नं. 0124-4670029, 4814673, 4814659

अस्वीकरण

इस किताब में दी गई जानकारी को भारतीय कृषि कौशल परिषद् के विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त किया गया है। भारतीय कृषि कौशल परिषद् इन सभी जानकारी की सटीकता, पूर्णता एवं पर्याप्तता की वारंटी नहीं लेता। इसमें दी गई जानकारी के बारे में, उसकी व्याख्याओं के लिए या त्रुटियों, चूक, या अपर्याप्तता के लिए भारतीय कृषि कौशल परिषद् कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। किताब में मौजूद सभी कॉपीराइट सामग्रियों के मालिक को ढूंढ़ने के हर प्रयास किए गए हैं। किसी भी तरह की गलती एवं चूक की तरफ ध्यान लाने के लिए पुस्तक के भावी संस्करणों में प्रकाशक आपके आभारी होंगे। इस किताब में दी गई जानकारी पर निर्भर होने पर इससे होने वाले किसी भी नुक्सान के लिए भारतीय कृषि कौशल परिषद् से संबंधित कोई भी संस्था जिम्मेदार नहीं होगी। इस प्रकाशन में उपलब्ध सामग्री कॉपीराइट के अधिकार क्षेत्र में हैं। अतः इस पुस्तक के किसी भी हिस्से को भारतीय कृषि कौशल परिषद की स्वीकृति के बिना अखबार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया या अन्य किसी भी माध्यम से दोबारा प्रस्तुत या इसका वितरण एवं संग्रहित नहीं किया जा सकता।

"कौशल विकास से एक बेहतर भारत का निर्माण होगा। अगर हमें भारत को विकास की दिशा में आगे बढ़ाना है तो कौशल विकास हमारा मिशन होना चाहिए।"

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री भारत

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

ASCI
Agriculture Skill Council of India

N•S•D•C
National Skill Development Corporation
Transforming the skill landscape

Certificate

COMPLIANCE TO QUALIFICATION PACK- NATIONAL OCCUPATIONAL STANDARDS

is hereby issued by the

AGRICULTURE SKILL COUNCIL OF INDIA

for

SKILLING CONTENT: PARTICIPANT HANDBOOK

Complying to National Occupational Standards of
Job Role/ Qualification Pack: **'Broiler Farm Worker'** QP No. **'AGR/Q4302, NSQF Level 3'**

Date of Issuance : June 14th, 2017
Valid Up to* : June 14th, 2021

*Valid up to the next review date of the Qualification Pack or the 'Valid up to' date mentioned above (whichever is earlier)

S.S. Ang

Authorised Signatory
(Agriculture Skill Council of India)

आभार

हम उन सभी संगठनों और व्यक्तियों के आभारी हैं जिन्होंने इस प्रतिभागी पुस्तिका को तैयार करने में हमारी मदद की है। हम उन सभी के लिए भी अपना आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने सामग्री की समीक्षा की और इसमें व्यक्त अध्यायों की गुणवत्ता, सुसंगतता और सामग्री प्रस्तुति में सुधार के लिए हमें बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। इस पुस्तिका से कौशल विकास के कदमों को सफल बनाने में मदद मिलेगी, जिससे हमारे हितधारकों विशेष रूप से प्रशिक्षुओं, प्रशिक्षकों और समीक्षकों आदि को बहुत मदद मिलेगी। हम अपने विषय विशेषज्ञ डॉ देसिकन त्यागराजन के अत्यंत ही आभारी हैं जिन्होंने हमें सामग्री दी है और प्रतिभागी पुस्तिका तैयार करने में हमारी मदद की है।

यह अपेक्षा की जाती है कि यह प्रकाशन क्यूपी / एनओएस आधारित प्रशिक्षण वितरण की पूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करेगा, हम भविष्य में किसी भी सुधार के लिए उपयोगकर्ताओं, उद्योग के विशेषज्ञों और अन्य हितधारकों के सुझावों का स्वागत करते हैं।

इस पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक ब्रायलर फार्म वर्कर, जिसे पोल्ट्री फार्म असिस्टेंट के रूप में भी जाना जाता है, की जिम्मेदारियों के बारे में ज्ञान एवं कार्यकुशलता का उत्तम साधन है। अपने कार्य के रूप में व्यक्ति अलग–अलग लोग मुर्गी पालन के लिए मुर्गी फार्म तैयार करते हैं, उनका चारा, पानी तैयार करते हैं, कूड़े को देखते हैं। बाजार के मानकों के अनुसार ब्रायलर चूजों को पालने के लिए ब्रूडिंग और स्वास्थ्य व्यवस्था करते है। इन मानकों के अनुसार ब्रॉयलर फार्म वर्कर को स्वतंत्र रूप से काम करना चाहिए, मेहनती होना चाहिए और उसके अंदर उसके कार्य के क्षेत्र से संबंधित परिचालन निर्णय लेने की क्षमता होनी चाहिए। प्रशिक्षु निम्नलिखित कौशल में प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में अपने ज्ञान में वृद्धि करेंगे:

- **ज्ञान और समझ:** आवश्यक कार्य करने के पर्याप्त परिचालन ज्ञान और समझ
- **प्रदर्शन मानदंड:** हैड्स ऑन प्रशिक्षण के माध्यम से आवश्यक कौशल प्राप्त करना और विशिष्ट परिचालन मानकों के भीतर आवश्यक संचालन करना
- **व्यावसायिक कौशल:** कार्य क्षेत्र से संबंधित परिचालन निर्णय लेने की क्षमता

इस काम की भूमिका के लिए प्रतिभागी को स्वतंत्र रूप से काम करने और अपने काम के क्षेत्र से जुड़े हुए फैसलों को लेने में सहज होना चाहिए। इसके अलावा इस काम में स्पष्टता, बुनियादी अंकगणितीय और बीजगणितीय सिद्धांतों के लिए कौशल की भी आवश्यकता होती है। प्रतिभागी को अपने काम करने और सीखने के लिए नतीजों के प्रति जिम्मेदार होना चाहिए। यह पुस्तक प्रतिभागी को विभिन्न उपकरणों का उपयोग करने और समस्या के त्वरित समाधान के लिए फैसला लेने के कौशल को दिखाने में भी सक्षम होगी।

उपयोग किये गए प्रतीक

सीखने के प्रमुख परिणाम

चरण

समय

टिप्स

टिप्पणियाँ

यूनिट का उद्देश्य

अभ्यास

सारांश

गतिविधि

विषय – सूची

क्र.सं.	मॉड्यूल और इकाइयां	पृष्ठ सं.
1.	परिचय	1
	इकाई 1.1 – भारत मे ब्रॉयलर खेती से परिचय	3
2.	काम की आवश्यकताओं को समझना (AGR/N4306)	6
	इकाई 2.1 – काम की आवश्यकताओं को समझना	8
	इकाई 2.2 – साइट चयन के लिए मानदंड	11
	इकाई 2.3 – वाणिज्यिक ब्रॉयलर खेती की क्षमता	15
3.	चूजों को रखने के लिए ब्रॉयलर शेड को तैयार करना (AGR/N4307)	21
	इकाई 3.1 – ब्रॉयलर के घर के निर्माण के लिए विशेषताएं	23
	इकाई 3.2 – ब्रायॅलर के घर का निर्माण व डिजाइन	27
	इकाई 3.3 – पेशेवर ब्रॉयलर खेत परिचालन	31
4.	ब्रूडिंग प्रबंधन करना (AGR/N4308)	37
	इकाई 4.1 – ब्रूडिंग प्रबंधन	39
	इकाई 4.2 – आम आहार घटक	43
	इकाई 4.3 – ब्रॉयलर राशन की गणना	50
	इकाई 4.4 – प्री स्टार्टर, स्टार्टर, तथा फिनिशर पक्षी प्रबंधन	53
	इकाई 4.5 – आहार प्रबंधन	56
5.	चूजों का स्वास्थ्य प्रबंधन (AGR/ N4304)	61
	इकाई 5.1 – ब्रायलर हाउस और पर्यावरण के कीटाणुनाशक और कीटाणुशोधन	63
	इकाई 5.2 – अमोनिया प्रदूषण के खराब प्रभाव	68
	इकाई 5.3 – कूड़ा प्रबंधन	72
	इकाई 5.4 – गर्मी का प्रबंधन	76
	इकाई 5.5 – सर्दी का प्रबंधन	80
	इकाई 5.6 – ब्रॉयलर खेती के लिए टीकाकरण कार्यक्रम	83
	इकाई 5.7 – ब्रॉयलर की आम बीमारियां	87
6.	खेती के उपकरण, इमारत तथा पर्यावरण का रखरखाव (AGR/ N4303)	92
	इकाई 6.1 – ब्रॉयलर खेत के उपकरण	94
	इकाई 6.2 – मशीनीकृत फार्म हाउस	99
	इकाई 6.3 – ब्राइलर खेत का सूक्ष्म पर्यावरण	103
	इकाई 6.4 – रिकॉर्ड रखना	109
	इकाई 6.5 – बैंक ऋण तथा बीमा	112
	इकाई 6.6 – ब्रॉयलर खेतों की अर्थव्यवस्था तथा परियोजना रिपोर्ट	115
7.	व्यक्तिगत स्वास्थ्य और सुरक्षा का रखरखाव (AGR/ N4311)	119
	इकाई 7.1 – जल स्वच्छता	121
	इकाई 7.2 – अपशिष्ट प्रबंधन	124
	इकाई 7.3 – चूजे की ड्रेसिंग	127
	इकाई 7.4 – व्यक्तिगत स्वच्छता को लागू करना	132
8.	रोजगारपरकता और उद्यम कौशल	135
	इकाई 8.1 – व्यक्तिगत शक्तियां एवं मूल्य श्रंखला	140
	इकाई 8.2 – डिजिटल साक्षरता : एक पुनरावर्ती	156
	इकाई 8.3 – धन संबंधी मामले	160
	इकाई 8.4 – रोजगार एवं स्वरोजगार के लिए तैयार होना	169
	इकाई 8.5 – उद्यमिता को समझना	179
	इकाई 8.6 – एक उद्यमी बनने के लिए तैयारी	201

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
& ENTREPRENEURSHIP

N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape

ASCI
Agriculture Skill Council of India

1.परिचय

इकाई 1.1 - भारत मे ब्रॉयलर खेती से परिचय

सीखने के प्रमुख परिणाम

इस मॉड्यूल के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगेः

1. भारत में ब्रॉयलर खेती बताने में

इकाई 1.1: भारत मे ब्रॉयलर खेती से परिचय

इकाई के उद्देश्य

इस यूनिट के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. ब्रॉयलर खेती की अवधारणा तथा इसके परिचालन को समझने में

1.1.1 परिचय

ब्रायलर चिकन गैलन डोमेस्टिक या ब्रॉयलर एक गैलनसियस डोमेस्टिक फाउल है जिसे खास तौर पर मांस उत्पादन के लिए बनाया व विकसित किया हुआ है। ब्रायलर मुर्गी पालन एक आकर्षक व्यवसाय है। आम तौर पर ज्यादा मांस देने वाले पक्षियों या पोल्ट्री नस्लों को ब्रॉयलर पोल्ट्री कहा जाता है। ब्रॉयलर अन्य आम पोल्ट्री पक्षियों की तरह हैं। लेकिन इस ब्रायलर को कम समय में अधिक मांस उत्पादन के लिए वैज्ञानिक तरीके से बनाया गया है। मूल रूप से, ब्रॉयलर केवल मांस उत्पादन के लिए हैं।

व्यापार के लिए ब्रॉइलर को चुनना–

ब्रायलर की कई नस्लें हैं। व्यवसाय के लिए ब्रायलर का चयन करने से पहले किसान को कुछ प्रक्रिया रखनी होती है। इन महत्वपूर्ण चरणों का वर्णन नीचे किया गया है।

- एक दिन के ब्रायलर चूजे का वजन 36 से 40 ग्राम के बीच होना चाहिए।
- यह पाया गया है कि यदि एक दिन की उम्र का चूजा काफी अच्छे वजन का हो गया है तो यह आपको तब बहुत अच्छा मुनाफा देगा जब आप उसे बेचेगे।
- ब्रायलर पोल्ट्री फार्मिंग से अधिक और सस्ते मुनाफे को लेने के लिए किसान को व्यवसाय के लिए अच्छी और उच्च उत्पादक नस्लों का चयन करना चाहिए।
- ब्रायलर भोजन को मांस में परिवर्तित करते हैं, इसलिए उन्हें उच्च गुणवत्ता वाला भोजन प्रदान करते हैं।
- किसान को ब्रायलर चिकन के भोजन में प्रोटीन और कैलोरी का बढ़िया अनुपात सुनिश्चित करना होगा।
- 0–6 सप्ताह के चिकन के लिए भोजन में 22.24: प्रोटीन और 2900–3000 मेटाबॉलिक हीट होनी चाहिए।
- अमीनो एसिड के बीच, ब्रायलर पोल्ट्री भोजन में लाइकेन और मेथियोनीन बहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह एसिड चिकन की सेहत को सुधारने में मदद करता है और भोजन को मांस में बदलने में मदद करता है।
- ब्रायलर भोजन में फाइबर का अनुपात 6 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।
- विटामिन ए, बी 2, डी 3, बी 12 और विटामिन के ब्रॉयलर भोजन के लिए एक काफी आवश्यक है।
- पोटेशियम, आयोडीन, मैंगनीज सल्फेट और जिंक कार्बोनेट को अलग से अच्छी तरह से मिलाया जाना चाहिए और चिकन को खिलाना चाहिए।
- ब्रॉयलर के खाने में थोड़ी मात्रा में कीटाणुनाशक होना चाहिए और यह चूजों को बीमारियों से मुक्त रखेगा।

काम

- शिपिंग डिब्बों से चूजों को निकालता है और उन्हें ब्रूडर हाउस में रखता है।
- फीडर और वाटर कंटेनर को साफ करता है और भरता है
- कीटाणुनाशक और टीके के साथ पोल्ट्री हाउस में स्प्रे करता है।
- किसी भी बीमारी के लिए पोल्ट्री का निरीक्षण करता है और कमजोर, बीमार और मृत मुर्गे को बाड़े से हटाता है।
- फीडिंग और प्रजनन रिपोर्ट को बनाए रखता है।
- आहार , पानी, रोशनी और वेंटिलेशन सिस्टमय और हाथ उपकरण आदि का उपयोग करके सिस्टम के पुर्जों को साफ, समायोजित, लुब्रिकेट करता है और उन्हें बदलता है

नोट्स

Skill India
कौशल भारत-कुशल भारत

सत्यमेव जयते
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SKILL DEVELOPMENT
& ENTREPRENEURSHIP

N·S·D·C
National
Skill Development
Corporation
Transforming the skill landscape

ASCI
Agriculture Skill Council of India

2. काम की आवश्यकताओं को समझना

इकाई 2.1 – काम की आवश्यकताओं को समझना
इकाई 2.2 – साइट चयन के लिए मानदंड
इकाई 2.3 – वाणिज्यिक ब्रॉयलर खेती की क्षमता

AGR/N4306

सीखने के प्रमुख परिणाम

इस मॉड्यूल के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. भारत में ब्रायलर उद्योग के विकास पर रूपरेखा बनाने मे
2. चिकन के मांस के पोषण महत्व का वर्णन करने मे
3. ब्रायलर उद्योग में निजी कंपनियों को पहचानने मे
4. साइट चयन के लिए विभिन्न महत्वपूर्ण कारकों पर वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने मे
5. भूमि चयन पर बुनियादी जानकारी का वर्णन करने मे
6. पर्यावरण की जरूरतों का आकलन करने में
7. जनशक्ति आवश्यकताओं की पहचान करने में और उनकी योजना बनाने में
8. कई तरह के वाणिज्यिक ब्रॉयलर हाइब्रिड्स को समझाने में

इकाई 2.1: काम की आवश्यकताओं को समझना

इकाई के उद्देश्य

इस यूनिट के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. भारत में ब्रॉयलर उद्योग की प्रगति को समझने में

2.1.1 भारत में ब्रायलर उद्योग का इतिहास

भारत में ब्रायलर उद्योग का इतिहास

- मुलायम मांस के साथ 60 दिन पुराने ब्रायलर पक्षी 1975 के बाद अलग इकाई के रूप में आने लगे थे। शुरू में हाइब्रिड ब्रॉयलर को जन्म देने वाले पक्षियों को आयात किया जाता था।
- प्रजनन कार्य दिल्ली में शुरू हुआ और बाद में दक्षिण भारत में स्थानांतरित हो गया
- जेनेटिक्स, पोषण, ब्रीडर मैनेजमेंट, हैचरी मैनेजमेंट, हाउसिंग एंड डिजीज मैनेजमेंट के क्षेत्र में ब्रॉइलर उत्पादन जबरदस्त तकनीकी कार्य किया गया है
- ब्रॉयलर के बढ़ने की अवधि 60 दिनों से धीरे–धीरे 40 दिनों तक कम हो गई है
- चिकन मांस का महत्व
- भारत में वार्षिक प्रति व्यक्ति खपत केवल 42 अंडे और 1.6 किलोग्राम मुर्गी के मांस की है, जो पोषण सलाहकार समिति द्वारा 180 अंडे और 11 किलो मुर्गी के मांस के अनुशंसित स्तर से कम है
- मटन की ज्यादा कीमतें, गौमांस और सूअर के मांस पर धार्मिक प्रतिबंध, और तटीय क्षेत्रों के बाहर मछली की सीमित उपलब्धता ने चिकन को भारत में सबसे पसंदीदा और सबसे अधिक खपत मांस बनाने में मदद की है।
- घरेलू उत्पादन के विस्तार और बढ़ते एकीकरण ने पोल्ट्री अर्थात मुर्गी के मांस की कीमतों को कम किया है और इसकी खपत को बढ़ाया है

भारतीय ब्रायलर उद्योग

- भारतीय पोल्ट्री उद्योग भारत में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है
- भारत में ब्रायलर का उत्पादन 8 –10 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ रहा है
- भारत ब्रायलर का अठारहवाँ सबसे बड़ा उत्पादक है.
- यह उद्योग मुख्य रूप से निजी उद्यमों की पहलों, कम से कम सरकारी हस्तक्षेप, पर्याप्त स्वदेशी पोल्ट्री आनुवंशिक क्षमताओं, आवश्यक पशु चिकित्सा स्वास्थ्य, पोल्ट्री आहार , उपकरण और पोल्ट्री प्रसंस्करण क्षेत्रों से समर्थन के कारण विकसित हुआ है।
- ऑल–इन–ऑल–आउट रियरिंग सिस्टम उत्कृष्ट प्रणाली और 2 किलो ब्रायलर को 36 दिनों में बनाया जाता है जिसमें 1.5 किलोग्राम आहार प्रति किलो चिकन होता है और जिसमें ग्रामीण किसानों द्वारा बनाए गए कम लागत वाले खुले घरों पर 3 प्रतिशत से कम मृत्यु दर हासिल कर ली गयी है।
- कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग या इंटीग्रेशन वाणिज्यिक ब्रायलर उद्योग के लिए एक प्रमुख भूमिका निभाती है ।

ब्रायलर उद्योग के लिए इंटीग्रेशन

- कई प्रकार की अर्थव्यवस्थाएं अन्य देशों में एकीकृत पोल्ट्री उत्पादन का आधार हैं जिसने भारत में भी अपनी पकड़ बनाना आरम्भ कर दिया है। भारत के दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सों में, बड़े पैमाने पर वर्टिकल एकीकरण पकड़ बना रहा है और खास तौर पर ब्रॉयलर उत्पादन में।

इस प्रणाली के अंतर्गत इंटीग्रेटर संपूर्ण वैल्यू चेन में निवेश करता है, जिसमें शामिल हैं:

- ग्रांड पेरेंट खेत
- मूल स्टॉक फार्म
- हैचरी और
- आहार मिल

पोल्ट्री किसान अपनी मौजूदा भूमि पर पोल्ट्री शेड और उपकरणों में निवेश करते हैं।

इंटीग्रेटर्स को निम्न चीजें प्रदान करना चाहिए:

- एक दिन बड़े चूजे
- आहार
- दवाएं/टीके
- प्रक्रिया में किसानों को प्रशिक्षण
- लागत प्रबंधन तथा
- तकनीकी पर्यवेक्षण

इंटीग्रेटर्स लगभग 42 दिनों की उम्र का ब्रॉयलर लेते हैं, और किसानों को सहमत दरों के अनुसार बढ़ते शुल्क का भुगतान किया जाता है। अगर एफसीआर और या मृत्यु दर अनुबंध किए गए स्तर से बेहतर होती है तो किसानों को प्रोत्साहन बोनस दिया जाता है। इस प्रकार, किसानों को पर्याप्त मूल्य बीमा प्राप्त होता है.

इंटीग्रेशन या एकीकरण में निम्न मुख्य कम्पनी हैं:

- वेंकटेश्वरा हैचरी
- सुगुना
- गोदरेज
- शांति
- टाफ
- अरुम्बाघ
- स्काईलार्क

ब्रॉयलर उद्योग में वर्टिकल एकीकरण या अनुबंध खेत जो आम है

ब्रॉयलर किसान	इंटीग्रेटर
ब्रॉयलर भोड और उपकरण का मालिक होता है	निम्न इन्पुट प्रदान करता है
डीप लिटर या पिंजरे की सामग्री खरीदता है पालने की गतिविधियों को करता है जैसे ब्रूडिंग, दाने देना, पानी देना (अपना श्रम या किराए पर लिया गया श्रम) ब्रूडिंग के लिए बिजली और ईंधन की लागत को वहन करता है खाद तथ खाली गनी बैग को लेता है।	एक दिन पुराने ब्रॉयलर चूजे (इस कारण के लिए वह एक ब्रीडर खेत भी रखता है।) चिड़ियों के लिए जरूरी ब्रॉयलर भोजन (इसके पास एक खुद की इकाई होती है।) दवाइयां और टीका (गुणवत्ता परक दवाइयां खरीदता है और उन्हें जरूरी होने पर किसानों को भी देता है।) आपातकालीन तथा नियमित पशुचिकित्सक सेवाएं (इस उद्देश्य के लिए कुशल पशुचिकित्सक) वह किसानों को मजदूरी, बिजली, इमारत और उपकरणो के लिए किराए का पैसा देता है और मुनाफे का हिस्सा लेता है। पैदा हुए ब्रॉयलर को वापस लेता है और उन्हें विक्रेताओं के माध्यम से बेचना सुनिश्चित करता है।

स्रोतः द पोल्ट्री इंडस्ट्री इन इंडिया (राजेश मेहता तथा आर जी नंबियार)

निष्कर्ष

- पोल्ट्री उद्योग तेज गति से बढ़ रहा है, ब्रॉयलर की संख्या में दस गुना वृद्धि हुई है।
- इसके सहायक उद्योग भी बढ़ रहे हैं । इन सबसे ऊपर, पोल्ट्री उद्योग की वृद्धि को न केवल व्यावसायिक सफलता के संदर्भ में देखा जाना चाहिए, बल्कि छोटे और सीमांत किसानों के लिए एक मुख्य समर्थन प्रणाली के रूप में भी देखा जाना चाहिए।
- पोल्ट्री विज्ञान और प्रौद्योगिकी में किये गए नए प्रयासों ने उच्च उत्पादन में सक्षम आनुवंशिक रूप से बेहतर नस्लों का विकास किया है, यहां तक कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, जो बड़े पैमाने पर पोल्ट्री उत्पादों के निर्यात और आयात का विस्तार करने के लिए विदेशी उद्यमियों के लिए अवसर प्रदान करते हैं।

टिप्स

भारत में ब्रॉयलर उद्योग की संभावना तथा अस्तित्व पर विस्तृत रूपरेखा

अभ्यास

1. भारत में ब्रॉयलर उद्योग की प्रगति के प्रतिशत को बताएं।

उत्तरः_____

_____

_____

2. इंटीग्रेशन क्या है?।

उत्तरः_____

_____

_____

नोट्स

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

इकाई 2.2: स्थान चयन करने के लिए मापदंड

इकाई के उद्देश्य

इस यूनिट के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. स्थान को चुनने के कई महत्वपूर्ण कारकों जैसे पर्यावरणीय आवश्यकताओं, मानव संसाधनों तथा सामान्य सुविधाओं की व्याख्या करने में।

2.2.1 परिचय

ब्रायलर फार्म हाउस के लिए उपयुक्त स्थल चयन के लिए किसान बहुत ज्यादा सोच विचार करते हैं। आजकल, किसानों को खेतों के स्थान के सम्बन्ध में पोलट्री हाउस के बारे में जागरूक होना चाहिए जैसे आस–पास के पड़ोसी, और सार्वजनिक क्षेत्र, पानी की गुणवत्ता कचड़ा निस्तारण, बिजली की आपूर्ति जैसे पर्यावरणीय मुद्दे आदि तथा वह नियम और प्रबंधन जो खेती के परिचालन को प्रभावित कर रहे हैं। साइट के चयन के लिए चार कारकों पर विचार करने की आवश्यकता है जैसे कि भूमि की आवश्यकताएं, बुनियादी सुविधाएं, पर्यावरणीय कारक और प्रबंधन से संबंधित अन्य मुद्दे।

पोलट्री हाउस स्थलों के चयन के लिए मापदंड

क. भूमि की आवश्यकताएं

- पोल्ट्री शेड के निर्माण के लिए एलिवेटेड टेरिन का चयन करना चाहिए और इसके साथ ही कठोर रेतीली मिट्टी भी अधिक उपयुक्त होती है। ऊंची जमीन शेड के पास जल भराव से और पानी के बहने से बचने में मदद करती है।
- एक दलदली क्षेत्र या घाटी के निचले हिस्से में पोल्ट्री फार्म लगाने से बचें क्योंकि इससे पोल्ट्री हाउस का उचित प्रबंधन नहीं हो पाएगा।
- शेड का निर्माण इस तरह से किया जाता है कि एंड वाल पूर्व–पश्चिम दिशा की ओर रहें और किनारे की दीवारें उत्तर–दक्षिण दिशा की ओर रहें ताकि सीधी धूप शेडों में प्रवेश न करें।
- जब हवा चिकन हाउस से किसी भी निवास की तरफ बहती है तो हवा की दिशा का पता लगाया जाना चाहिए। चिकन हाउस से पैदा होने वाली दुर्गन्ध आस–पास के निवास तक पहुंचने से पहले फैलने के लिए को पर्याप्त समय और दूरी दी जानी चाहिए। किसी भी निवास के लिए पोल्ट्री हाउस के स्थान से पर्याप्त दूरी की आवश्यकता होती है अगर उस समय चलने वाली हवाएं निवास की तरफ बहुत ही तेजी से बह रही हैं।
- कूड़े को उर्वरक के रूप में ठीक से उपयोग करने के लिए खेत पर उपलब्ध पर्याप्त भूमि सुनिश्चित करें, या बाहर कूड़े को हटाने और निपटाने के लिए उचित सुविधाएं हों।
- विंड शेड एक ऐसा शब्द है जो मौजूदा इमारत के निचले हिस्से में हवा के प्रवाह का पैटर्न बताता है। पड़ोसियों द्वारा शिकायतों को कम करने में मदद करने के लिए, विंडशील्ड क्षेत्र के आसपास के घरों को बाहर रखने के सही से उचित विचार रखना चाहिए।

चित्र 2.2.1 पोल्ट्री हाउस साइटों के चयन के लिए मानदंड

सुविधाएं

- पानी, बिजली, संपर्क सड़कों, चूजों की आपूर्ति, पशु चिकित्सा सेवाओं और मंहगे पक्षियों और अंडों की बिक्री के लिए बाजार की पर्याप्त सुविधा सुनिश्चित करना।
- जो सड़कें हैं उन्हें वर्ष के सभी समय के दौरान आहार ट्रकों, चूजे की डिलीवरी करने वाले वाहनों और लाइव हौल ट्रक के इमारतों तक पहुँचने के लिए पर्याप्त होना चाहिए।
- प्रति पक्षी पर्याप्त फर्श का स्थान पोल्ट्री शेड के निर्माण के लिए बीआईएस के विनिर्देशों के अनुसार उपलब्ध हैं।

पर्यावरणीय कारक

- शेड को इस तरह से बनाना कि शिकारी (बिल्ली, कुत्ते या सांप) शेड में किसी भी प्रकार से प्रवेश न करें। चूहा रोधी सिविल संरचना का निर्माण करके चूहों के प्रवेश से बचें।
- शेड को साफ रखें और मक्खी और मच्छरों से बचें।
- सभी मौसमों के दौरान पर्याप्त प्रकाश और वेंटिलेशन और आरामदायक आवास की स्थिति प्रदान करें (गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म)।

प्रबंधन की समस्या

- प्रत्येक बैच के बाद, गंदे कूड़े की सामग्री और खाद को हटा दिया जाना चाहिए, दीवारों और फर्श को साफ किया जाना चाहिए, सफेद चूने से धोया जाना चाहिए और 0.5: मैलाथियान या डीडीटी कीटनाशक स्प्रे या फॉर्मलाडीहाइड समाधान के साथ कीटाणुरहित किया जाना चाहिए।
- यदि गहरे कूड़े प्रणाली का पालन किया जाता है, तो हमेशा सूखी और साफ कूड़े की सामग्री (चूरा, धान की भूसी, आदि) का उपयोग करें। 4 इंच की परत को फर्श पर फैलाएं, साफ / कीटाणुरहित ब्रूडिंग, फीडिंग और पानी देने वाले उपकरण रखें और फिर घर में चूजों को लाएं। कूड़े की सामग्री को हमेशा खुला और सूखा रखा जाना चाहिए। सप्ताह में दो बार कूड़े को हिलाएं। किसी भी गीला कूड़े या बूंदों आदि को हटा दिया जाना चाहिए और उन्हें ताजा या साफ सूखे कूड़े से बदल दिया जाना चाहिए।
- यदि पिंजरे प्रणाली का पालन किया जाता है, तो सुनिश्चित करें कि बूंदों को चूना पाउडर या 10 प्रतिशत मैलाथियान स्प्रे के साथ महीने में दो बार मक्खियों की रोकथाम के लिए फैलाया जाए। पिंजरे के नीचे की बूंदों को 6 महीने के बाद हटाया जा सकता है।
- मजबूत छत और कड़ा फर्श बनाएं। बाहर के जमीनी स्तर से कम से कम एक फीट ऊपर शेड बनाए।

निष्कर्ष

नए पोल्ट्री हाउस या खेत के निर्माण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है कि स्थान का चयन सही से किया जाए। आने वाली समस्याओं को उनके होने से पहले ही सम्हालना बहुत उचित होता है। उचित नियोजन से पर्यावरणीय समस्याओं को कम करने मे मदद मिलेगी और इससे आगे जाकर में समय और धन की बचत होगी।

टिप्स

निम्न बिंदुओं को याद रखा जाए:

- महत्वपूर्ण पर्यावरणीय कारक
- मूल संरचनात्मक सुविधाएं
- भूमि के चयन को बीमारी के बचाव के साथ संबद्ध करें

अभ्यास

1. दो खेतों के बीच कम से कम दूरी क्या होनी चाहिए।

उत्तरः_____

_____

2. एक फार्म हाउस से दूसरे फार्म हाउस के बीच कम से कम दूरी बताएं।

उत्तरः_____

_____

_____

3. भूमि को कितना उठा हुआ होना चाहिए।

उत्तरः_____

_____

_____

4. आम सुविधाओं की सूची बनाएं।

उत्तरः_____

_____

_____

5. महत्वपूर्ण पर्यावरणीय कारकों को बताएं।

उत्तरः_____

_____

_____

6. मार्केटिंग आउटलेट को बताएं।

उत्तरः_____

_____

_____

7. परभक्षियों से कैसे बचा जा सकता है?

उत्तरः_____

_____

_____

8. मक्खियों के उपद्रव के कारण बताएं।

उत्तरः_____

_____

_____

नोट्स

इकाई 2.3: व्यावसायिक ब्रायलर खेती की संभावनाएं

इकाई के उद्देश्य

इस यूनिट के अंत में, आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. भारत में ब्रॉयलर गतिविधि की व्याख्या करने में

2.3.1 व्यावसायिक ब्रायलर खेती की संभावनाएं

परिचय

- चिकन मांस को इंसान के आहार में अच्छी गुणवत्ता वाले प्रोटीन, खनिज और विटामिन के रूप में माना जाता है।
- ब्रायलर खेती से किसान की आर्थिक स्थिति बेहतर हो सकती है और किसानों को सहायक आय और लाभकारी रोजगार भी मिल सकता है।

ब्रॉयलर

- ब्रॉयलर किसी भी सेक्स के युवा चिकन का एक कोमल मांस होता है जो केवल 6 सप्ताह के समय में 38–40 ग्राम वजन से लेकर 1 किलोग्राम 700 ग्राम से अधिक वजन तक बढ़ता है।

ब्रायलर मांस का उत्पादन

- भारत का पांचवां सबसे बड़ा ब्रायलर मांस उत्पादन है
- सालाना उत्पादन है – 6 मिलियन मीट्रिक टन
- भारत में पोल्ट्री मांस की प्रति व्यक्ति उपलब्धता – 2.96 किलोग्राम है लेकिन आईसीएमआर ने प्रति वर्ष 11 किलो मांस की सिफारिश की

ब्रायलर खेती के गुण

- अन्य खेतों की तुलना में कम प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता होती है
- बहुत ही कम समय में आय सृजन (शुरुआत के 6 सप्ताह बाद)
- एक ही समय मे काफी बैचो को बनाए रख सकते हैं
- अन्य पशुओं की तुलना में एक पक्षी शरीर के वजन बढ़ाने के लिए आवश्यक आहार की मात्रा कम होती है
- समाज में पोल्ट्री मांस की उच्च मांग

व्यावसायिक ब्रायलर खेती की संभावनाएं

- भारत सरकार या राज्य सरकार द्वारा मुर्गीपालन क्षेत्र में सक्षम नीतिगत माहौल के साथ कॉर्पोरेट क्षेत्र के कदमों के द्वारा ग्रामीण गरीब समाज के लिए पिछड़े या छोटे पैमाने पर ब्रायलर फार्मिंग इकाइयों के लिए रोजगार के बड़े अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।
- हमारी भारतीय सरकारें और पोल्ट्री निगम बुनियादी सुविधाओं को आकर्षक बना रहे हैं जिससे नए उद्यमी इस व्यवसाय को अपनाने के लिए आकर्षित हों।
- ब्रायलर खेती को राष्ट्रीय नीति में काफी महत्व दिया गया है और आने वाले वर्षों में इसके विकास की अच्छी संभावना है।

वाणिज्यिक ब्रॉयलर स्टेन

चिकन की विशेष रूप से विकसित किस्में (ब्रॉयलर) अब तेज विकास और ज्यादा आहार रूपांतरण कुशलता की खूबियों के साथ उपलब्ध हैं

वाणिज्यिक ब्रायलर स्ट्रेन – ब्रूडिंग समूह

- कॉब–वैंट्रेस (कोब के साथ, एवियन, सासो और ह्यब्रो ब्रांड)
- एवीजेन (रॉस, आर्बर एकड़, लोहमान, भारतीय नदी और पीटरसन ब्रांड)
- ग्रुपग्रिमांड (हबर्ड और ग्रिमंड,फेरे बैंड के साथ) कॉब

चित्र 2.2.2 कॉब–वैन्ट्रेस

कॉब–वैंट्रेस

- कॉब–वैंट्रेस एक वैश्विक कंपनी है जो दुनिया भर में प्रोटीन को उपलब्ध, स्वस्थ और सस्ता बनाने के लिए नए अनुसंधान और प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रही है
- कॉब की सबसे ज्यादा मान्यता प्राप्त ब्रायलर है कॉब 500

कॉब 500 – आहार , उपज और अर्थव्यवस्था

- कॉब डेटा दिखाता है कि स्तन मांस की मात्रा को बढ़ाने के लिए प्रोटीन और अमीनो एसिड को लगभग 8 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है, हालांकि पक्षी के वजन के लिए प्रति पक्षी आहार` की ज्यादा लागत से नतीजे बिगड़ सकते हैं।
- प्रति इकाई पक्षी के लिए सबसे सस्ते आहार के लिए, कम अमीनो एसिड को अधिक प्रयोग किया जा सकता है धक लागू हो सकता है, हालांकि धीमी वृद्धि दर और ज्यादा एफासीआर का नतीजा अच्छा नहीं हो सकता है।
- अमीनो एसिड के एकदम सटीक समग्र स्तर को घटक के मूल्यों तथा तैयार उत्पाद मूल्यों (प्रसंस्करण संयंत्र से) द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए।
- कॉब 500 एक लचीला ब्रॉयलर है जो लोएमीनो एसिड डेंसिटी आहार से अच्छी लागत ला सकता है, या उच्च एमिनो एसिड स्तरों के इस्तेमाल से बेहतर प्रगति और स्तन के मांस में वृद्धि करेगा।
- कॉब टेक्निकल सर्विस खुशी से ग्राहकों को सूत्र के संग खास आर्थिक प्राथमिकताओं से मेल करने में मदद करती है, हालाँकि, इस पूरक में सिफारिशें बहुत ही मजबूत कुल बेस लाइन लेबल को दिखाती हैं।

कॉब 500 ब्रायलर प्रदर्शन

लिंग	उम्र	वजन (ग्राम)	औसत दैनिक वृद्धि	आहार की ला1 लागत (ग्राम)
नर	1st सप्ताह	184	26.3	167
	2nd सप्ताह	460	32.9	537
	3rd सप्ताह	914	43.5	1155
	4th सप्ताह	1463	52.2	2052
	5th सप्ताह	2083	59.5	3183
	6th सप्ताह	2671	63.6	4499
मादा	1st सप्ताह	186	26.6	167
	2nd सप्ताह	470	33.6	546
	3rd सप्ताह	971	46.2	1228
	4th सप्ताह	1585	56.6	2222
	5th सप्ताह	2299	65.7	3520
	6th सप्ताह	3044	72.5	5073

कॉब 500 ब्रायलर पोषण

आवश्यक न्यूनतम विशेषताएं				
	स्टार्टर	ग्रोअर	फिनिशर 1	फिनिशर 2
आहार की मात्रा प्रति पक्षी	250 ग्राम	1000 ग्रम		
	0.55 एलबी	2.20 एलबी		
आहार को खिलाने की अवधि	0–10	11–12	23–42	43+
आहार की संरचना	सी रम बी	पैलेट	पैलेट	पैलेट
कूड प्रोटीन प्रतिषत	21–22	19–20	18–19	17–18
चपाचपय उजा एमजे प्रति किग्रा.	12.59	12.92	13.26	13.36
अमेन कैलोरी प्रति किग्रा	3008	3086	3167	3191
कैलोरी प्रति एलबी	1365	1400	1438	1448
लाइसिन प्रतिशत	1.32	1.19	1.05	1.00
पचन योग्य प्रतिशत	1.18	1.05	0.95	0.90
मीथियन प्रतिशत	0.50	0.48	0.43	0.41
पचनयोग्य मीथियन प्रतिशत	0.45	0.42	0.39	0.37
मेट + सीवाईएस	0.98	0.89	0.82	0.78
पचनयोग्य मेट + सीवीएस	0.88	0.80	0.74	0.70
ट्राई फटोफन प्रतिशत	0.20	0.19	0.19	0.18
पचनयोग्य ट्राईफटोफन प्रतिशत	0.18	0.17	0.17	0.16
थेरोनाइन प्रतिशत	0.86	0.78	0.71	0.68
पचनयोग्य थेरोनाइन प्रतिशत	0.77	0.69	0.5	0.61
अर्ग्रनीन प्रतिशत	1.38	1.25	1.13	1.08
वैलीन प्रतिशत	1.00	0.91	0.81	0.77
पचनयोग्य वैलीन प्रतिशत	0.89	0.80	0.73	0.69
आइसोलेक इन प्रतिशत	0.88	0.80	0.71	0.68
पचनयोग्य आइसोलेक इन प्रतिशत	0.79	0.70	0.65	0.61
कैलशियम प्रतिशत	0.90	0.84	0.76	0.76
उपलब्ध फास्फोरस प्रतिशत	0.45	0.42	0.38	0.38
सोडियम प्रतिशत	0.16–0.23	0.16–0.23	0.15–0.23	0.15–0.23
क्लोराइड प्रतिशत	0.17–0.23	0.16–0.23	0.15–0.23	0.15–0.23
पोटेशियम प्रतिशत	0.60–0.95	0.60–0.85	0.60–0.80	0.60–0.80
लाइनोएक एसिड प्रतिशत	1.00	1.00	1.00	1.00

स्रोतः कॉब ब्राइलर प्रदर्शन तथा पोषण संपूरक – रॉस

- रॉस पोल्ट्री (अब एविजन) रॉस ब्रॉयलर का उत्पादन करती है जो अलग–अलग प्रकार मे आता है। सबसे ज्यादा इस्तेमाल करने वाले हैं: रॉस 308 (सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला), रॉस 708 और रॉस पीएम 3।

रॉस प्रदर्शन

- रॉस चूजे के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए नीचे तालिका प्रदान करते हैं
- यह तालिका कई तरह के चूजों के समूह में विश्वसनीयता और सटीकता का चूजे के वजन का अनुमान देने के लिए आवश्यक पक्षियों की न्यूनतम संख्या दिखाती है।

झुंड की एकसारता	कितने पक्षियों का वजन लिया जाना है
एकसार (CV%= 8)	61
कम एकसार (CV%= 10)	96
बहुत ही खराब एकसार (CV%= 12)	138

झुंड की एकसारता की गणना
मानक विचलन
..... X 100
औसत शरीर का वजन

वजन लेने के लिए पक्षियों के नमूने के बिंदु तथा व्यक्तिगत पक्षी वजन

स्रोतः रॉस ब्रॉयलर प्रबंधन पुस्तिकाः प्रस्तावना हबर्ड

- हबर्ड फ्लेक्स पैकेज एक प्रतिस्पर्धी चिक मूल्य, एक कम लागत वाला लाइव ब्रायलर, साथ ही साथ अच्छा शव वाहन प्रदान करता है
- यह निर्विवाद रूप से बाजार पर वर्तमान में सभी प्रजनकों का सबसे उत्तम एफसीआर प्रदान करता है।
- इसकी कुल मांस उपज और विरूपण इसे 1.8 और 3.0 किग्रा के बीच स्लॉटर वजन के लिए एक आदर्श उत्पाद बनाते हैं
- हबर्ड एफ 15 फीमेल एक मुर्गी के उत्पादन को सक्षम बनाता है, चूजे की लागत और समग्र मांस उपज के संदर्भ में आधुनिक मुर्गीपालन उद्योग द्वारा 1.5 से 2.8 किग्रा के लाइव वजन के साथ हर श्रेणी में आवश्यक लचीलापन प्रदान करता है। अपने माता–पिता की तरह, इस प्रकार के ब्रायलर बहुत ही बेहतरीन एफसीआर में से एक है। अंत में, इसकी खूबियों में शव गुणवत्ता और जीवित रहने की क्षमता भी शामिल है

निष्कर्ष

वर्तमान में, ब्रायलर उद्योग क्षेत्र मांस की अधिक से अधिक स्वीकृति के साथ सबसे तेजी से बढ़ते पशुधन क्षेत्र के रूप में उभरा है।

- पिछले कुछ दशकों के दौरान, ब्रायलर खेती ने एक पिछड़े उद्यम से एक तेजी से बढ़ते क्षेत्र में एक बड़ी छलांग ली है
- इस उद्योग से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए, इसकी तकनीकी के बारे में उचित परिचय आवश्यक है जैसेः नस्ल, आवास, भोजन, प्रबंधन आदि।

टिप्स

- ब्रॉयलर की मार्केटिंग उम्र 6 से 8 सप्ताह होती है।
- मार्केटिंग के समय वजन 1.5 से 2 किग्रा होता है।

अभ्यास

1. वर्तमान ब्रॉयलर खेती गतिविधि के बारे में बताएं।

उत्तरः_____

_____

2. कुछ पेशेवर ब्रॉयलर हाईब्रिड की सूची दें।

उत्तरः_____

_____

_____

3. ब्राॅइलर मांस क्या है?

उत्तरः_____

_____

_____

4. मार्केटिंग वजन व उम्र बताएं।

उत्तरः_____

_____

_____

नोट्स

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____